Topic 28 भ्वादिगण आत्मनेपदी धातुयें —।

टित आत्मनेपदानां टेरे।

टितो लस्यात्मनेपदानां टेरेत्वम्। एधते।

आतो ङितः।

अतः परस्य ङितामाकारस्य इय् स्यात्।
एधेते। एधन्ते।

थासः से।

टितो लस्य थासः से स्यात्। एधसे। एधेथे। एधध्वे। 'अतो गुणे' - एधे, एधावहे, एधामहे।

इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः।

इजादिर्यो धातुर्गुरुमानृच्छत्यन्यस्तत आम् स्याल्लिटि।

आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य।

आम् प्रत्ययो यस्मात् इत्यतद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः। आम्प्रकृत्या तुल्यमनुप्रयुज्यमानात् कृञोऽप्यात्मनेपदम्।

लिटस्तझयोरेशिरेच्।

लिडादेशयोस्तझयोः 'एश्' 'इरेच्' एतौ स्तः। एधाञ्चक्रे। एधाञ्चक्राते। एधाञ्चक्रिरे। एधाञ्चकृषे। एधाञ्चक्राथे।

लिट् के 'त' के स्थान पर 'एश' और 'झ' के स्थान पर 'इरेच्' आदेश होते हैं। 'एश' में लशक्वतद्धिते से शकार इत्संज्ञक है, अतः शित् होने से सम्पूर्ण 'त' के स्थान पर होता है। 'इरेच्' का चकार इत्संज्ञक है। अनेकाल होने के कारण यह भी 'अनेकाल् शित्सर्वस्य' परिभाषा से सम्पूर्ण 'झ' के स्थान पर होगा। उदाहरण देखिए

P.T.O.

'श्यामकृत' में लिट् के 'त' के स्थान पर एश् होकर 'श्याम् कृ ए' रूप बनता है। इस स्थिति में द्वित्व आदि करने से 'श्यामञ्चक्रे' रूप सिद्ध होगा। इसी प्रकार लिट् लकार के प्रथमपुरुष बहुवचन में 'श्याम् कृ अं' रूप बनने पर 'अं' के स्थान पर 'इरेच्' होकर 'श्याम कृ इरे' रूप बनता है। इस अवस्था में पुन: द्वित्व आदि करने से 'श्यामञ्चक्रिरे' रूप सिद्ध होता है।